TO JOIN OUR UPSC PAID GROUP

WHATSAPP GROUP ➡ 9818323004

THE HINDU ANALYSIS – 08 JUNE 2023

संपादकीय 1: अल्पावधि में, वास्तविक नियंत्रण रेखा को स्थिर करें

प्रसंग

- **पिछले कुछ वर्षों से वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी)** पर स्थिति बेहद तनावपूर्ण बनी हुई है; डोकलाम और गलवान संकट के बीच यह युद्ध से कुछ ही दूर रह गया है।

वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी)

- वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC), चीन-भारतीय सीमा विवाद के संदर्भ में, एक काल्पनिक सीमांकन रेखा है जो भारतीय-नियंत्रित क्षेत्र को चीनी-नियंत्रित क्षेत्र से अलग करती है।
- एलएसी चीन-भारतीय सीमा विवाद में प्रत्येक देश द्वारा दावा की गई सीमाओं से अलग है। भारतीय दावों में संपूर्ण **अक्साई चिन क्षेत्र शामिल है और चीनी दावों में ज़ंगनान (दक्षिण तिब्बत)/अरुणाचल प्रदेश शामिल हैं।** ये दावे "वास्तविक नियंत्रण" की अवधारणा में शामिल नहीं हैं।
- एलएसी को आम तौर पर तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है:
- भारत की ओर लद्दाख और चीन की ओर तिब्बत और झिंजियांग स्वायत्त क्षेत्रों के बीच पश्चिमी **क्षेत्र** ; भारतीय पक्ष में उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के बीच मध्य **क्षेत्र** और चीनी पक्ष में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र; भारतीय पक्ष में ज़ंगनान (दक्षिण तिब्बत)/अरुणाचल प्रदेश और चीनी पक्ष में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के बीच पूर्वी **क्षेत्र** । यह क्षेत्र आमतौर पर मैकमोहन रेखा का अनुसरण करता है।

समझौते और अपर्याप्तताएं

- दिसंबर 1988 में तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री की चीन यात्रा के बाद भारत-चीन संबंधों को गति मिली।
- तब से, एलएसी के साथ शांति बनाए रखने, सीमा मुद्दे से निपटने के लिए रूपरेखा तैयार करने और सरकार के उच्चतम स्तरों से जुड़ाव के स्पेक्ट्रम को कवर करने के लिए दोनों देशों के बीच (1993, 1996, 2005 और 2013 में) चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। क्षेत्र में सीमा कर्मियों की बैठकों के लिए।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 9818323004

- दो दशकों से अधिक समय से, इन व्यवस्थाओं ने अपने उद्देश्य को अच्छी तरह से पूरा किया है। हालांकि, एलएसी पर बढ़ा हुआ तनाव बताता है कि समझौतों में खामियां हैं।
- भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान के बीच वर्तमान मानसिकता चीन के साथ "अनम्य" होने की है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि चीनियों की "सलामी स्लाइसिंग रणनीति" को रोका जाना चाहिए।
- जहां दृढ़ता जरूरी है, वहीं एलएसी पर बढ़ती झड़पों के कारणों की पहचान करने और समाधान पर काम करने की भी जरूरत है।
- राय यह है कि एलएसी की घटनाओं में वृद्धि का एकमात्र कारण आक्रामकता नहीं है; निगरानी तकनीक में क्वांटम जंप उन क्षेत्रों में विरोधी ताकतों की आवाजाही की दृश्यता प्रदान करता है जो पहले ब्लाइंड स्पॉट थे।
- यह बढ़ी हुई टुकड़ी घनत्व, बेहतर सड़कें, बेहतर रसद और विमानन संपत्ति की उपलब्धता के साथ मिलकर प्रतिक्रिया क्षमता को बढ़ाता है, जिससे आमना-सामना और संघर्ष बढ़ता है।

सुझाव

- सीमा दावों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना एलएसी को मानचित्र पर और जमीन पर चित्रित करके **नियंत्रण रेखा (एलसी) में परिवर्तित करना।** यह आगे बढ़ने वाले सैनिकों के बीच आगे बढ़ने के आग्रह को कम करेगा। यह मुश्किल लग सकता है लेकिन दोनों पक्षों द्वारा परिपक्वता के प्रदर्शन और प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ इसे लागू किया जा सकता है।
- इसके अलावा, इसे अपने क्षेत्र में कठिन सीमावर्ती क्षेत्रों में **मजबूत बुनियादी ढांचे का** निर्माण करने की आवश्यकता है ताकि कुशल तरीके से कर्मियों और अन्य रसद आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सके।
- सीमा सैनिकों को अपनी बातचीत जारी रखनी चाहिए, जल्दी से पीछे हटना चाहिए, उचित दूरी बनाए रखनी चाहिए और तनाव कम करना चाहिए।
- दोनों पक्षों को चीन-भारत सीमा मामलों पर **सभी मौजूदा समझौतों और प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए और ऐसी किसी भी कार्रवाई से बचना चाहिए जो मामलों को बढ़ा सकती है।**
- एलएसी पर विवादित क्षेत्रों को **नो एंट्री जोन माना जा सकता है** ; वैकल्पिक रूप से, दोनों पक्षों को पारस्परिक रूप से सहमत आवृत्ति के अनुसार इन क्षेत्रों में गश्त करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038108

- **विवादित क्षेत्रों की संयुक्त गश्त का** भी पता लगाया जाना चाहिए क्योंकि इससे यथास्थिति बनी रह सकती है और विश्वास में वृद्धि हो सकती है।
- **मौजूदा विश्वास निर्माण उपायों और जुड़ाव तंत्र को** मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि स्थानीय मुद्दों को जल्दी से सुलझाया जा सके।

निष्कर्ष

- भारत-चीन सीमा समस्या की जटिलता तत्काल आधार पर स्थायी समाधान की राह में बाधा बनती है। इस प्रकार, यह बेहतर है कि दोनों पक्ष संघर्ष की संभावनाओं को कम करते हुए एलएसी को स्थिर करने के लिए अल्पकालिक लेकिन प्रभावी और व्यावहारिक कदम उठाने पर विचार करें।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054036168

संपादकीय 2: दुखद ट्रैक

प्रसंग

- 2 जून को ओडिशा के बालासोर में रेल दुर्घटना, जिसमें तीन ट्रेनों की टक्कर शामिल है, भारत को अपनी रेल सेवाओं के आधुनिकीकरण और विस्तार में आने वाली चुनौतियों का एक दुखद अनुस्मारक है।

पृष्ठभूमि

- दो दशकों में सबसे भीषण रेल दुर्घटना में शालीमार-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस, यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस और एक मालगाड़ी की टक्कर में कम से कम 275 लोग मारे गए और 900 से अधिक घायल हो गए।
- प्रभाव के कारण यात्री ट्रेन के डिब्बे पटरी से उतर गए और विपरीत दिशा में यात्रा कर रही एक अन्य यात्री ट्रेन से टकरा गए।
- प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि सिग्नल प्रणाली में तकनीकी खराबी दुर्घटना का कारण हो सकती है।
- रेलवे अधिकारियों ने मूल कारण और जिम्मेदार पार्टियों की पहचान की है और इस मुद्दे को सुधारने के लिए कदम उठा रहे हैं। यह दुखद घटना भारत में रेल सुरक्षा की मौजूदा चुनौतियों और भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।

भारतीय रेलवे की सुरक्षा में चूक

- **पटरी से उतरना** भारत में ट्रेन दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण रहा है। सुरक्षा प्रोटोकॉल में चूक, ट्रैक रखरखाव, और ट्रैक दोषों की पहचान करने और सुधारने में विफलता के परिणामस्वरूप पटरी से उतरे हैं।
- सिग्नल सिस्टम में चूक, मानवीय भूल और ट्रेनों के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखने में विफलता के कारण **ट्रेनों की टक्कर हुई है।**
- **समपारों** की सुरक्षा सुनिश्चित करने में चूक के कारण रेलगाड़ियों और सड़क वाहनों से जुड़ी दुर्घटनाएँ हुई हैं।
- **ट्रेन दुर्घटनाओं के लिए खराबी या अनुचित सिग्नलिंग सिस्टम** जिम्मेदार हैं।
- **ट्रेनों में क्षमता से अधिक भीड़भाड़ और ओवरस्पीडिंग** भी दुर्घटनाओं का कारण बनी है। उचित भीड़ प्रबंधन का अभाव और गति सीमा लागू करने में विफलता महत्वपूर्ण सुरक्षा चिंताएं रही हैं।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038168

सुरक्षा उपायों का महत्व

- **यात्रियों की अधिक संख्या:** एक विशाल आबादी और लाखों लोग अपने दैनिक आवागमन के लिए रेलवे पर निर्भर हैं, ऐसे में भारतीय रेलवे की सुरक्षा सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **आर्थिक प्रभाव: भारतीय** रेलवे देश के परिवहन बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण घटक है और अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **प्रतिष्ठा और जनता का विश्वास:** भारतीय रेलवे की सुरक्षा प्रणाली में जनता के विश्वास और विश्वास को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।
- **अंतर्राष्ट्रीय तुलना:** भारतीय रेलवे में सुरक्षा मानकों की तुलना अक्सर विकसित देशों के मानकों से की जाती है। जापान, चीन और कई यूरोपीय देशों जैसे देशों ने प्रदर्शित किया है कि उच्च सुरक्षा मानकों को प्राप्त किया जा सकता है।
- **कनेक्टिविटी** : भारतीय रेलवे कनेक्टिविटी के लिए एक जीवन रेखा है, यह सुनिश्चित करती है कि विभिन्न क्षेत्रों के लोग यात्रा कर सकें और आर्थिक विकास के अवसरों तक पहुंच सकें।
- **नियामक अनुपालन** : सुरक्षा एक नियामक आवश्यकता है और भारतीय रेलवे के लिए एक कानूनी दायित्व है।

सरकार की पहल

- **कवच प्रणाली** : कवच भारतीय रेलवे के लिए स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली है।
- **राष्ट्रीय रेल सुरक्षा कोष (आरआरएसके)** : सरकार ने 2017-18 में आरआरएसके की शुरुआत की, जो एक समर्पित कोष है जिसका उद्देश्य व्यवस्थित तरीके से सुरक्षा संबंधी कार्य करना है।
- **प्रोजेक्ट मिशन रफ़्तार** : यह एक भारतीय रेलवे परियोजना है, जिसे 2016-17 के रेल बजट में पेश किया गया था और 2017 में नीति आयोग द्वारा अनुमोदित किया गया था। इसका लक्ष्य मालगाड़ियों की औसत गति को दोगुना करना और यात्री ट्रेन की गति को 50% तक बढ़ाना है।
- **बुनियादी ढांचे का उन्नयन:** सरकार रेलवे के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण और उन्नयन में महत्वपूर्ण धन का निवेश कर रही है। इसमें रेलवे लाइनों का विद्युतीकरण, रेल नेटवर्क का विस्तार और वंदे भारत एक्सप्रेस जैसी हाई-स्पीड और अल्ट्रा-हाई-स्पीड लाइनों की शुरुआत शामिल है।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038168

- **सुरक्षा उपायों का कार्यान्वयन:** पूरे रेलवे नेटवर्क में सुरक्षा उपायों को लागू करने के प्रयास किए गए हैं। इनमें कोचों में आग और धुएं का पता लगाने वाली प्रणाली की स्थापना, अग्निशामक यंत्रों का प्रावधान और कवच एप्लिकेशन जैसी तकनीकों का विकास शामिल है जो लोकोमोटिव पायलटों को ब्रेक सिस्टम को स्वचालित रूप से ट्रिगर करने में सहायता करती है।
- **चौकीदार वाले समपारों को समाप्त करना:** सरकार चौकीदार वाले समपारों को समाप्त करने की दिशा में काम कर रही है, जो दुर्घटनाओं की संभावना रखते हैं। रेलवे सुरक्षा को बढ़ाने के लिए उन्हें अंडरपास, ओवरपास और अन्य सुरक्षा उपायों से बदलने का प्रयास किया जा रहा है।
- **ऑडिट रिपोर्ट और सिफारिशें:** भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) समय-समय पर भारतीय रेलवे का ऑडिट करते हैं, कमियों की पहचान करते हैं और सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए सिफारिशें करते हैं। ये रिपोर्ट सुधारात्मक कार्रवाइयों और सुरक्षा प्रोटोकॉल में सुधार के आधार के रूप में कार्य करती हैं।

सुझाव

- सघन जांच-पड़ताल करें।
- रखरखाव प्रथाओं को मजबूत करें।
- पर्याप्त धन आवंटित करें।
- स्टाफिंग और प्रशिक्षण बढ़ाएं।
- उन्नत तकनीकों को लागू करें।
- एक संस्कृति के रूप में सुरक्षा को प्राथमिकता दें।

निष्कर्ष

- कोविड-19 महामारी से एक साल पहले एक दिन में 23 मिलियन के शिखर की तुलना में भारतीय रेलवे अब हर दिन लगभग 15 मिलियन यात्रियों को ले जाती है। बालासोर दुर्घटना में तोड़फोड़ से इंकार नहीं किया गया है, जिसकी जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा की जाएगी। अधिक महत्वपूर्ण परिचालन और नियोजन स्तरों पर रेलवे द्वारा सुधारात्मक उपाय होंगे। इसे अपनी प्राथमिकताओं को आधुनिक और युक्तिसंगत बनाने के लिए और अधिक संसाधन खोजने होंगे।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8540386

Click here ☞ **upsc.desire**

upsc.desire

UPSC DESIRE

🎯 UPSC | SSC | RAILWAY 🎯
Educational Consultant
🎯 DEDICATED TO UPSC ASPIRANTS🎯
🎯 IAS | IPS | IFS | IRS | PCS | RAS 🎯
🎯 UPSC GS NOTES AVAILABLE 🎯

Click here ☞ **everyday.current.gk**

everyday.current.gk

Everyday Current Gk

🎯SSC | RAILWAY | BANK | UPSC🎯
🎯 CURRENT AFFAIRS IN DETAIL
🎯 MATHS | REASONING
🎯 ALL GK TOPICS | SCIENCE
🎯 STUDENTS REVIEWS 🔥🔥

UPSC.DESIRE WHATSAPP GROUP 8054